CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

[Conference Special-NTMAE-24]

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता कार्यक्रम : गुणात्मक शिक्षा के संदर्भ में

डॉ सरोज चौधरी
उप प्राचार्या
विवेक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कालवाड़, जयपुर, राजस्थान
Email – neeruc1979@gmail.com, Mobile - 9414206708

First draft received: 14.05.2024, Reviewed: 29.05.2024, Final proof received: 20.06.2024, Accepted: 27.06.2024

सारांश

आधारभूत शिक्षण बच्चे के भावी शिक्षण का आधार है। बोध के साथ पठन, लेखन और मूलभूत गणितीय प्रश्नों को हल करने के मूलभूत कौशलों को प्राप्त न कर पाने से, बच्चा कक्षा–3 के बाद की पाठ्यचर्या जटिलताओं के लिए तैयार नहीं हो पाता है। प्रारंभिक शिक्षण की महत्ता को देखते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में उल्लेख किया गया है कि "हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 तक प्राथमिक और उससे आगे सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करने की होनी चाहिए। इसी कड़ी में निपुण भारत योजना 2021 को भी जोड़ा गया है। इसे वर्ष 2020 में लायी गयी शिक्षा नीति के बेहतर क्रियान्वयन के लिए प्रारम्भ किया गया है। भारत सरकार द्वारा 5 जुलाई 2021 को योजना की शुरुआत की गयी। राष्ट्रीय पहल (निपुण भारत) का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि देश में प्रत्येक बच्चा अनिवार्य रूप से 2026–27 तक ग्रेड 3 के अंत तक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता का ज्ञान प्राप्त कर ले। जिससे उन्हें वर्ष 2026–2027 तक पढ़ने, लिखने व अंक गणित करने की क्षमता मिल सके। मूलभूत साक्षरता व संख्यात्मक ज्ञान विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक है।

मुख्य शब्द: *मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता, निपुण भारत आदि.*

परिचय

भारत सरकार सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण देखभाल और शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में सीखने की नींव के रूप में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा और देखभाल के महत्व पर बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में इसे सुनिश्चित करने और संधारणीय विकास लक्ष्य 2030 के साथ इन प्रयासों को सरेखित करने के उपायों की दृढ़ता से अनुशंसा की गई है। नीति में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा और देखभाल को स्कूली शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में लेकर आने के लिए स्कूली शिक्षा की पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना में बदलाव का सुझाव दिया गया है। इसके लिए इसे 5+3+3+4 के रूप में चार चरणों वाली व्यवस्था की संकल्पना की गई है। इस प्रकार नीति में 3–8 वर्ष की आयु (बुनियादी चरण) के पहले पाँच वर्षों को बुनियादी वर्षों के रूप में संदर्भित किया जा रहा है, जो स्कूली शिक्षा प्रणाली का एक अंग होगा।

नीति में माना गया है कि पढ़ने, लिखने और संख्याओं के साथ बुनियादी प्रचालनों की क्षमता भविष्य की पूरी स्कूली शिक्षा और आजीवन सीखने के लिए एक आवश्यक आधार एवं अनिवार्य शर्त है। नीति में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि इस स्वागत योग्य बदलाव से लगभग 5 करोड़ बच्चों को लाभ होगा। नीति में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए यह कहा है कि यदि विद्यार्थी बुनियादी स्तर पर सीखने की मूलभूत आवश्यकताएँ (अर्थात पढ़ना, लिखना और अंकगणित) हासिल नहीं करते हैं, तो शेष नीति विद्यार्थियों के लिए अप्रासंगिक हो जाएगी।''

इसके साथ ही नीति में इस बात पर बल दिया गया है कि वर्ष 2025 तक प्राथमिक विद्यालयों में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता हासिल की जानी चाहिए और शिक्षा मंत्रालय द्वारा मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर एक राष्ट्रीय मिशन स्थापित करने की भी अनुशंसा की गई है। इन्हीं अनुशंसाओं को ध्यान में रखते हुए मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर विभिन्न पहलें की गई हैं। इस संदर्भ में राष्ट्रीय स्तर पर की गई कुछ पहलों का उल्लेख करना महत्वपूर्ण है–

निपुण भारत – मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर राष्ट्रीय मिशन

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने साक्षरता और संख्यात्मकता पर एक राष्ट्रीय मिशन शुरू किया है, जिसे संख्यात्मकता और समझ के साथ पढ़ने में दक्षता हेतु राष्ट्रीय पहल (निपुण भारत) कहा जाता है। निपुण भारत के दिशानिर्देश में प्राथमिकताएँ और कार्रवाई योग्य कार्यसूचियाँ निर्धारित की गई हैं। राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को कक्षा 3 के अंत तक प्रत्येक बच्चे के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता में दक्षता का लक्ष्य प्राप्त करना है। इस मिशन का उद्देश्य सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में प्रत्येक बच्चे की प्रगति पर नजर रखते हुए स्कूली शिक्षा के शुरुआती वर्षों में स्कूलों (शिक्षा) तक बच्चों की पहुँच और उनके स्कूली शिक्षा में रुके रहने, शिक्षकों के क्षमता निर्माण तथा विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उच्च गुणवत्तायुक्त एवं विविध प्रकार के संसाधनों और शिक्षण सामग्री का विकास करना है। मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर राष्ट्रीय मिशन को मौजूदा मुख्यधारा संरचनाओं का सुदृढ़ीकरण करके उपयोग करके और सभी हितधारकों की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से समग्र दृष्टिकोण के साथ लागू किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 'तत्काल राष्ट्रीय मिशन' के रूप में सभी बच्चों के लिये मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता की प्राप्ति को प्राथमिकता दी गई है।

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता

एफएलएन को मोटे तौर पर एक बच्चे की बुनियादी पाठ पढ़ने और आधारभूत गणित के सवालों (जैसे– जोड़ और घटाव) को हल करने की उसकी क्षमता के रूप में संकल्पित किया गया है। वर्ष 2026–27 तक कक्षा 3 के बच्चों के लिये सार्वभौमिक साक्षरता और संख्यात्मकता सुनिश्चित करने के दृष्टिकोण के साथ वर्ष 2021 में निपुण–भारत कार्यक्रम शुरू किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्र प्रायोजित योजना 'समग्र शिक्षा' के तत्वावधान में सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में राष्ट्रीय–राज्य–ज़िला–प्रखंड–स्कूल स्तर पर स्थापित एक पाँच–स्तरीय कार्यान्वयन तंत्र की परिकल्पना की गई है। एफएलएन के पक्ष में यह तर्क दिया जाता है कि पढ़ने–लिखने और संख्याओं के साथ बुनियादी क्रियाएँ कर सकने की क्षमता भविष्य की सभी स्कूली शिक्षा और आजीवन सीखने हेतु एक आवश्यक आधार तथा अनिवार्य शर्त है।

'ग्रेड 3 स्तर पर बच्चों के लिये फाउंडेशनल लर्निंग स्टडी' विभिन्न भारतीय भाषाओं में समझ विकसित करने के साथ पढ़ सकने की उनकी क्षमता के लिये

मानक स्थापित करने में सक्षम होगी। यह एक निश्चित गति, सटीकता और समझ के साथ आयु–उपयुक्त पाठ (ज्ञात और अज्ञात पाठ दोनों) पढ़ सकने की क्षमता के साथ–साथ मूलभूत संख्यात्मक कौशल का आकलन करेगा।

एनईपी, 2020 के संदर्भ में एफएलएन

प्रारंभिक शिक्षा के महत्व को पहचानते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि "हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 तक प्राथमिक विद्यालय और उसके बाद सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) हासिल करना होनी चाहिए। यदि यह सबसे बुनियादी शिक्षा (बुनियादी स्तर पर पढ़ना, लिखना और अंकगणित) पहले हासिल नहीं की जाती है, तो हमारे छात्रों के इतने बड़े हिस्से के लिए बाकी नीति काफी हद तक अप्रासंगिक होगी।"

- मूलभूत शिक्षा को देश के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता बनाना।
- मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर एक राष्ट्रीय मिशन शुरू करना।
- 2026–27 तक प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक एफएलएन प्राप्त करना।

शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य 2026–27 तक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता हासिल करना है, जहां, ग्रेड 3 तक हर बच्चा...

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता कार्यक्रम

मूलभूत भाषा और साक्षरता

भाषा का पहले से मौजूद ज्ञान भाषाओं में साक्षरता कौशल बनाने में मदद करता है। मूलभूत भाषा और साक्षरता के प्रमुख घटक हैं–

- मौखिक भाषा विकास– इसमें सुनने की बेहतर समझ शामिल है; मौखिक शब्दावली और विस्तारित बातचीत कौशल। पढ़ने और लिखने के कौशल विकसित करने के लिए मौखिक भाषा के अनुभव महत्वपूर्ण हैं।
- डिकोडिंग – इसमें प्रतीकों और उनकी ध्वनियों के बीच संबंध को समझने के आधार पर लिखित शब्दों को समझना शामिल है।
- प्रवाहपूर्वक पढ़ना – किसी पाठ को सटीकता, गति (स्वचालितता), अभिव्यक्ति (छंद), और समझ के साथ पढ़ने की क्षमता को संदर्भित करता है जो बच्चों को पाठ से अर्थ निकालने की अनुमति देता है। कई बच्चे अक्षर पहचानते हैं, लेकिन उन्हें एक–एक करके बड़ी मेहनत से पढ़ते हैं।
- पढ़ने की समझ – इसमें किसी पाठ से अर्थ निकालना और उसके बारे में आलोचनात्मक ढंग से सोचना शामिल है। यह डोमेन पाठों को समझने और उनसे जानकारी प्राप्त करने के साथ–साथ पाठों की व्याख्या करने की दक्षताओं को कवर करता है।
- लेखन–इस क्षेत्र में अक्षर और शब्द लिखने के साथ–साथ अभिव्यक्ति के लिए लिखने की दक्षता भी शामिल है।

मूलभूत संख्यात्मकता

मूलभूत संख्यात्मकता का अर्थ है तर्क करने की क्षमता और दैनिक जीवन की समस्याओं के समाधान में सरल संख्यात्मक अवधारणाओं को लागू करना। प्रारंभिक गणित के प्रमुख पहलू और घटक हैं–

- पूर्व–संख्या अवधारणाएँ– संख्या प्रणाली को गिनें और समझें।
- संख्याएं और संख्याओं पर संचालन– गणितीय तकनीकों में महारत हासिल करने के लिए आवश्यक परंपराओं को सीखें, जैसे संख्याओं को दर्शाने के लिए आधार दस प्रणाली का उपयोग।
- आकृतियाँ और स्थानिक समझ– तीन अंकों की संख्याओं तक अपने तरीके से सरल गणनाएँ करें और इन्हें विभिन्न संदर्भों में अपने दैनिक जीवन की गतिविधियों में लागू करें।
- मापन– तीन अंकों तक की संख्याओं पर जोड़, घटाव, गुणा और भाग के संचालन को करने के लिए मानक एल्गोरिदम को समझें और उनका उपयोग करें।
- डेटा हैंडलिंग– आकृतियों को दोहराने से लेकर संख्याओं में पैटर्न तक सरल पैटर्न को पहचानें और विस्तारित करें, अपने दैनिक जीवन की गतिविधियों में सरल डेटा/जानकारी की व्याख्या करें।

राष्ट्रीय मिशनः निपुण भारत विजन

मिशन का दृष्टिकोण मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के सार्वभौमिक अधिग्रहण को सुनिश्चित करने के लिए एक सक्षम वातावरण बनाना है ताकि 2026–27 तक प्रत्येक बच्चा ग्रेड 3 के अंत में और ग्रेड 5 के बाद पढ़ने, लिखने और संख्यात्मकता में वांछित सीखने की दक्षता हासिल कर ले।

राष्ट्रीय मिशन के उद्देश्य

कार्यक्रम को मौजूदा मुख्यधारा संरचनाओं के उपयोग और मजबूती के साथ मिशन मोड में लागू किया जाएगा। स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय (एमओई) राष्ट्रीय स्तर पर कार्यान्वयन एजेंसी होगी और इसका नेतृत्व एक मिशन निदेशक करेगा–

- खेल, खोज और गतिविधि–आधारित शिक्षाशास्त्र को शामिल करके, इसे बच्चों की दैनिक जीवन स्थितियों से जोड़कर और बच्चों की घरेलू भाषाओं को औपचारिक रूप से शामिल करके एक समावेशी कक्षा वातावरण सुनिश्चित करना।
- बच्चों को स्थायी पढ़ने और लिखने के कौशल के साथ प्रेरित, स्वतंत्र और समझने योग्य पाठक और लेखक बनने में सक्षम बनाना।
- बच्चों को संख्या, माप और आकृतियों के क्षेत्र में तर्क समझाना और उन्हें संख्यात्मकता और स्थानिक समझ कौशल के माध्यम से समस्या समाधान में स्वतंत्र बनने में सक्षम बनाएं।
- बच्चों की परिचित/घर/माँ की भाषा में उच्च–गुणवत्ता और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण–अधिगम सामग्री की उपलब्धता और प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करना।
- शिक्षकों, मुख्य शिक्षकों, शैक्षणिक संसाधन व्यक्तियों और शिक्षा प्रशासकों की निरंतर क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना।
- आजीवन सीखने की एक मजबूत नींव बनाने के लिए सभी हितधारकों यानी शिक्षकों, अभिभावकों, छात्रों और समुदाय, नीति निर्माताओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना।
- पोर्टफोलियो, समूह और सहयोगात्मक कार्य, प्रोजेक्ट कार्य, क्विज़, रोल प्ले, गेम, मौखिक प्रस्तुतियाँ, लघु परीक्षण इत्यादि के माध्यम से सीखने के लिए "जैसा, जैसा और उसके लिए" मूल्यांकन सुनिश्चित करना।
- सभी छात्रों के सीखने के स्तर की ट्रैकिंग सुनिश्चित करना।

मूलभूत शिक्षा के लिए सीखने के परिणामों के विकास लक्ष्य

मूलभूत शिक्षा के लिए सीखने के परिणामों को 3 तीन विकासात्मक लक्ष्यों में विभाजित किया गया है– लक्ष्य 1–एचडब्ल्यू (स्वास्थ्य और कल्याण), लक्ष्य 2–ईसी (प्रभावी संचारक), लक्ष्य 3–आईएल (शामिल शिक्षार्थी)। प्रत्येक लक्ष्य की प्रमुख दक्षताओं की भी पहचान की गई है।

विकासात्मक लक्ष्यों को ईसीसीई के 3 साल और उसके बाद 3 साल की स्कूली शिक्षा के अनुरूप छह स्तरों में विभाजित किया गया है। आसान पहचान और संदर्भ के लिए प्रत्येक सीखने के परिणाम को एक नंबर/कोड दिया गया है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि ये संख्याएँ पदानुक्रमित नहीं हैं, बल्कि ये अनुभव एक साथ एकीकृत तरीके से प्रदान किए जा सकते हैं।

राष्ट्रीय मिशन सीखने के परिणामों को प्राप्त करने में समग्र राष्ट्रीय लक्ष्यों की घोषणा करेगा, जिसमें प्रत्येक राज्य/केंद्र शासित प्रदेश द्वारा वर्ष 2026–27 तक प्राप्त किए जाने वाले वर्षवार परिणाम भी शामिल होंगे। मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए समग्र साक्षरता और संख्यात्मकता लक्ष्य या बालवाटिका से शुरू होने वाली मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के लक्ष्य के रूप में निर्धारित किए गए हैं।

निष्कर्ष

विश्लेषणोपरांत यह कहा जा सकता है कि मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता कार्यक्रम में गतिविधि आधारित शिक्षा पर बल दिया गया है तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए अनुकूल शिक्षण वातावरण का निर्माण करना आवश्यक होगा। यह बच्चों को कक्षा में बनाए रखने में सक्षम बनाएगा, जिससे स्कूल छोड़ने वालों की संख्या में कमी आएगी। इस कार्यक्रम से प्राथमिक से उच्च–प्राथमिक में संक्रमण दर में सुधार होगा।

संदर्भ सूची

https://dsel.education.gov.in/sites/default/files/NIPUN_BHARAT_GUIDELINES_HI.pdf

https://ncert.nic.in/pdf/announcement/NIPUNBharat_web.pdf

https://www.education.gov.in/shikshakparv/docs/Sarvest_Kumar.pdf

https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/Learning_Outcomes%E2%80%93Hi ndi.pdf

https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep/NEP_Final_English.p df

https://en.wikipedia.org/wiki/National_Policy_on_Education

www.business-standard.com/article/education/nep-2020-why-learning-inmother-tongue-is-effective-but-hard-to-implement-120081200399_1.html.3

https://sprf.in/vocational-education-in-the-nep-2020-opportunities-and
https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf

https://www.orfonline.org/hindi/research/challenges-new-education-policy-2020- education-in-indian/

https://reflections.live/articles/23/244-kd8upntt-2020.html

https://www.allresearchjournal.com/archives/2020/vol6issue9/PartB/6-9-7-410.pdf